शिक्षामित्र | एक प्रायोगिक स्कूल और संसाधन केन्द्र

सुदेशना सिन्हा

विशेष शिक्षा की अपनी पृष्ठभूमि और कोलकाता में प्रवासी बच्चों के लिए हिन्दी माध्यम स्कूल चलाने के अनुभव (1994-2004) ने अक्सर मुझे और मेरे कुछ क़रीबी सहयोगियों को बच्चों की, विशेष रूप से निम्न आय-वर्ग के, शैक्षिक आवश्यकताओं की समीक्षा करने की ओर प्रवृत्त किया। इन वर्षों के दौरान मुझे जो अनुभव हुए, उनसे पुनः उसी बात की पुष्टि हुई जिसे कई लोग पहले से ही जानते हैं। वह यह है कि - सभी के लिए एक निश्चित पाठ्यक्रम वाली 10-12 साल की स्कूली शिक्षा प्रणाली न तो प्रत्येक शिक्षार्थी के व्यक्तित्व और क्षमता का सम्मान करती है और न ही उन्हें जीवन का बेहतर रूप से सामना करने के लिए तैयार करती है। इसके अलावा सिस्टम में फिट होने की कोशिश में, हाशिए पर रहने वाले अधिकांश लोग उससे बाहर हो जाते हैं और बदले में वे अपनी उत्तरजीविता के कौशल भी खो बैठते हैं।

2004 में मैंने अपने कुछ सहयोगियों के साथ 10-14 आयु-वर्ग के बच्चों के लिए, बंगाली माध्यम का एक स्कूल स्थापित करने का फैसला किया। रचनात्मकता और समालोचनात्मकता के लिहाज से यह सबसे बेहतर उम्र होती है। साथ ही इस आयु-वर्ग के बच्चे सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं और उनके स्कूल छोड़ने की सम्भावना भी अधिक। इसके अलावा इस आयु-समूह के बच्चों से हमें यह अपेक्षा थी कि वे बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान प्राप्त कर चुके होंगे और इसलिए वे पाठ्यक्रम सम्बन्धी उन विभिन्न प्रयोगों के लिए तैयार होंगे जो हमने सोच रखे थे।

आरम्भ (2005-2011)

हमें दक्षिण कोलकाता में, प्रसिद्ध कालीघाट मन्दिर के पास, चेतला नामक इलाके में एक जगह मिली। पड़ोस में पंजीकृत झुग्गी-बस्तियों का सर्वेक्षण करते समय हमने दो-तीन महीनों तक वहाँ के निवासियों को नए स्कूल की अवधारणा के बारे में बार-बार बताया। सत्रह बच्चों ने दाख़िला लिया और 2005 के अप्रैल माह में *शिक्षामित्र* शुरू हुआ। इनमें से अधिकांश बच्चे सरकारी स्कूलों में जा रहे थे और कुछ स्कूल छोड़ चुके थे। सभी अपने स्कूलों से निराश थे और कुछ नया करने की कोशिश में आए थे। शिक्षामित्र स्कूल छह साल तक चला और अन्त तक नामांकन की संख्या 25 से 30 के बीच रही।

उथल-पुथल का शुरुआती दौर

हमने पाया कि यह विद्यार्थी अशान्त और आक्रामक थे तथा खुले तौर पर शिक्षण समुदाय के प्रति अपने सन्देह और तिरस्कार का प्रदर्शन कर रहे थे; वे हिंसा की ओर प्रवृत्त और सीखने के प्रति अनिच्छुक थे। अपने शिक्षण के दौरान हमें शिक्षण-योजना को स्थगित करना पड़ता था; कला और मिट्टी के काम ने कुछ हद तक उन्हें शान्त करने में मदद की। बच्चों को विभिन्न विषयों पर रोल-प्ले करने के लिए आमंत्रित किया गया जैसे ब्रेक टाइम, कक्षा-शिक्षण, स्कूल के बन्द होने के समय, बाहर खेले जाने वाले खेल, घर में बिताया गया समय आदि। अभिनय की आड़ में, बच्चों ने अपमान और यातना की वे कहानियाँ सुनाईं जो कि हाशिए पर होने के कारण उन्हें अपनी पिछली कक्षाओं में और अपने आस-पड़ोस में सहनी पड़ी थीं और कैसे पहले उन्होंने बदला लेने की कोशिश की, फिर विनम्र हुए और अन्त में आत्म-समर्पण कर दिया।

रोल-प्ले ने धीरे-धीरे समझ के एक पुल का निर्माण किया और फिर एक लोकतांत्रिक अभ्यास शुरू हुआ जिसमें विद्यार्थी और शिक्षक साथ बैठकर मुद्दों, कठिनाइयों और सकारात्मक क्षणों पर चर्चा करते और साथ ही स्कूल की गतिविधियों की समीक्षा करते हुए सुझावों पर चर्चा करते। सहयोग, देखभाल तथा सीखने और अपनी ग़लतियों को स्वीकार करने के लिए किए गए प्रयासों को प्रोत्साहन और मुक्त प्रशंसा से पुरस्कृत किया जाता था।

शारीरिक श्रम की गरिमा और स्कूल के प्रति स्वामित्व-भाव को सुनिश्चित करने और बनाए रखने के लिए शिक्षक और बच्चे स्कूल के रोज़मर्रा के रख-रखाव में लगे हुए थे। एक रोस्टर में अलग-अलग कार्यों को और उन्हें करने वालों के नामों को सूचीबद्ध किया गया। यह कार्य थे – धूल झाड़ना, पोंछा लगाना, दरवाज़े और खिड़कियाँ बन्द करना, शौचालय की सफ़ाई करना, घण्टी बजाना आदि। स्कूल-समुदाय को इस अभ्यास को स्वीकार करने और महत्त्व देने में थोड़ा समय लगा, हालाँकि कुछ अपवाद भी थे।

लगभग छह महीने में यह बच्चे इस स्कूल के आदी होने लगे। हमारा स्कूल सप्ताह में पाँच दिन, छह से सात घण्टे काम करता था। पाठ्यक्रम में संगीत, कला, शिल्प, हाथ के काम, नृत्य, रंगमंच, खेल, फ़िल्में तथा सड़कों, पुराने बन्दरगाहों, बाज़ारों,

कला दीर्घाओं, बागवानी पार्क और शिल्प-संस्थाओं का दौरा करना शामिल था जिन्हें अक्सर नियमित शैक्षिक विषयों के साथ एकीकृत किया जाता था। कला पर इतना अधिक ज़ोर दिया जाता था कि कुछ माता-पिता को, जो अपने बच्चों को भर्ती कराने आए थे, लगा कि यह संगीत और नृत्य का विद्यालय है!

बंगाली सीखना

9 से 14 वर्ष के बीच के साठ प्रतिशत विद्यार्थियों, जिन्होंने औपचारिक रूप से कक्षा II, III और IV उत्तीर्ण कर ली थी, ने साक्षरता और संख्या-ज्ञान के बुनियादी स्तर को हासिल नहीं किया था। कुछ तो बंगाली में भी अपना नाम तक लिखने में असमर्थ थे। बंगाली में बुनियादी पठन और लेखन कौशल सुनिश्चित करना हमारी सबसे बड़ी चुनौती बन गई। हमने ऐसे विभिन्न तरीक़े अपनाए जो पहले अन्य स्थानों में सफल रहे थे। बार-बार असफल होने के बाद हमने प्रो. जलालुद्दीन द्वारा शुरू की गई *रीडिंग गारण्टी स्कीम* की ओर रुख किया। इस पद्धति को अपनाने के बाद अधिकांश बच्चों ने तीन महीने के भीतर पढ़ना और लिखना सीख लिया, जबकि कुछ को थोड़ा और समय लगा।

इस विधि में इन बातों पर ध्यान दिया गया था :

- बच्चों के स्वयं के दृष्टिकोण से किसी तस्वीर या कहानी की व्याख्या करना। शिक्षार्थियों ने शिक्षक की मदद से अपनी भाषा में एक नए पाठ्य का निर्माण किया। इस विधि ने पढ़ने को सार्थक और सुखद बना दिया। शब्दों को सीखना और याद रखना आसान हो गया क्योंकि वे बच्चों के सन्दर्भ से जुड़े हुए थे।
- इसके साथ ही बच्चों का परिचय, बांग्ला भाषा की बारहखड़ी के चार्ट से करवाया गया जिसमें व्यंजन और स्वर संकेतों (मात्रा) का संयोजन किया हुआ था। इसका उपयोग सरल शब्दों (संयुक्ताक्षरों के बिना) के निर्माण के लिए किया गया जिससे सही वर्तनी को भी बल मिला। इससे डिस्लेक्सिया वाले बच्चों को भी मदद मिली, जो अन्यथा मात्रा के संकेतों को सही ढंग से जोड़ पाने में असमर्थ थे। बारहखड़ी का परिचय देने से पहले हम यह सुनिश्चित करते थे कि विद्यार्थी बंगाली अक्षरों और स्वरों के संकेतों को जान गए हैं।
- हमने तीसरा घटक यह जोड़ा कि हम उपयुक्त वर्कशीट्स का उपयोग करते थे जो बाद में शिक्षार्थियों और शिक्षकों में बहुत लोकप्रिय हुआ।

हमें जल्द ही पता चल गया कि सरल भाषा में उपयुक्त पाठ्यों का उपयोग करना कितना महत्त्वपूर्ण था : माना कि वे सभी शुरुआती शिक्षार्थी थे, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि बड़े बच्चे उन्हीं पाठ्यों का आनन्द लेंगे जो छोटी आयु-वर्ग के बच्चों के लिए इस्तेमाल किए जा रहे थे! प्रसिद्ध लेखकों द्वारा रचित उचित प्रकार के आकर्षक पाठ्यों की कमी थी, जो वैसे तो बहुत अच्छे थे, लेकिन इन शुरुआती पाठकों के लिए प्रभावी नहीं थे। कई पाठ्यों के सन्दर्भ और भाषा पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वालों के लिए अपरिचित थी।

हम चाहते थे कि पठन सामग्री छोटी हो यानी एक पृष्ठ से अधिक न हो, बड़े फॉन्ट में लिखी गई हो और शब्दों के बीच पर्याप्त खाली स्थान हो। इसलिए, हम शिक्षकों और विद्यार्थियों ने कक्षा में अपने स्वयं के पाठ्यों का निर्माण शुरू किया। शिक्षकों ने ग्रिम की फेयरी टेल्स, चेखव, टॉल्स्टॉय, सुकुमार रॉय, लीला मजूमदार और अन्य लेखकों की कहानियों के लघु संस्करण बनाए। पूरे स्कूल पर मानो छोटे और बड़े अंशों को लिखने की सनक सवार हो गई थी जिनकी भाषा तो सरल हो लेकिन विचार जटिल। *शिक्षामित्र* ने विद्यार्थियों बनाए चित्रों के साथ इन्हें छापना शुरू किया। एक ही साल के भीतर पुस्तकालय की किताबों, उनकी तस्वीरों और डिज़ाइनों में बच्चों की दिलचस्पी जादुई रूप से बढ़ गई।

अँग्रेज़ी सीखना

हमारे पास पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वालों को अँग्रेज़ी सिखाने के लिए बंगाली के समान कोई आज़माया हुआ तरीक़ा नहीं था। हमने ईसाई अम्बलम स्कूल और ऑरोविले जैसी जगहों से सलाह ली और विशेष शिक्षा की तकनीकों का इस्तेमाल किया। हमने प्रयोग के माध्यम से अपना अँग्रेज़ी पैकेज विकसित किया। इसमें उपयोग की जाने वाली कुछ विधियाँ इस प्रकार हैं :

- विद्यार्थियों को वर्ड-अटैक और वर्तनी के लिए ध्वन्यात्मक कौशल में महारत हासिल करने और तीन महीने के भीतर पचास शब्दों की एक बुनियादी शब्दावली हासिल करने में मदद की गई। बाद में और शब्द जोड़े गए। वर्ड-अटैक एक डिकोडिंग कौशल है। यह मुद्रित शब्द को बोले गए शब्द से जोड़ने की क्षमता है और पढ़ना सीखने के लिए एक बुनियादी ज़रूरत है। यह समान ध्वनि वाले शब्दों को डिकोड(decode) करने में भी मदद करता है, जैसे कि chant और pant।
- उन्हें मूल शब्दावली (संज्ञा, क्रिया, आर्टिकल्स, विशेषण, सम्बन्धबोधक अव्यय) का उपयोग करके बहुत ही सरल वाक्यों के चरण-दर-चरण निर्माण से परिचित कराया गया था। पाँच महीने के भीतर जब विद्यार्थियों में वाक्य बनाने, लिखने, पढ़ने और ज़ोर से बोलने का आत्म-विश्वास आ गया तो उन्होंने अपने दम पर लिखना शुरू कर दिया। इसके बाद उन्होंने छोटे-छोटे विवरण लिखना शुरू किया

और वर्ष के अन्त तक वे अनुच्छेद और छोटी कहानियाँ लिखने लगे।

- पढ़े या लिखे गए पाठ्य के चित्रण को प्रोत्साहित किया गया। इससे शिक्षकों को यह समझने में मदद मिली कि शिक्षार्थी ने कितना समझा है। इस प्रक्रिया से दिलचस्प और सस्ती सामग्री का निर्माण हुआ।
- इसके साथ-साथ कुछ अन्य कार्य करने के प्रयास भी किए गए जैसे चुने गए गीतों और कहानियों को ध्यान से सुनना, फिल्में देखना, शिक्षकों और आगन्तुकों के साथ अँग्रेज़ी में बातचीत करना आदि। इन सभी से बच्चों में भाषा सीखने की क्षमता विकसित करने में मदद मिली।

संख्या का ज्ञान प्राप्त करना

यह कार्य कुछ आसान था। हमने आन्तरिक रूप से ही ठोस सामग्री विकसित की। *जोड़ो ज्ञान* जैसे संगठनों से कुछ सामग्रियों को अपनी आवश्यकताओं और आर्थिक स्थिति के अनुरूप परिवर्तित किया गया।

किसी एक अवधारणा पर विभिन्न सामग्रियों को डिज़ाइन किया गया और इनका उपयोग विभिन्न शिक्षार्थियों द्वारा किया गया, जिनमें ऐसे शिक्षार्थी भी शामिल थे जिन्हें संख्या-ज्ञान को लेकर दिक्क़त थी। आमतौर पर गणित की यह सहायक सामग्रियाँ जूनियर कक्षाओं तक ही सीमित रहती हैं। लेकिन माध्यमिक स्तर के लिए पहली बार बीजगणित और ज्यामिति में उपयुक्त सामग्री बड़ी कुशलता के साथ विकसित की गई। इन सामग्रियों की सहायता से बच्चों की अवधारणा सम्बन्धी समझ में बहुत उल्लेखनीय प्रगति देखी गई।

अन्य विषय

हमें इस बात की स्वतंत्रता थी कि हम इतिहास, भूगोल और विज्ञान जैसे सामान्य स्कूली विषयों के शिक्षण के लिए दुनिया भर में विकसित सभी समृद्ध शैक्षणिक अभ्यासों को अपनाएँ। स्थानीय सर्वेक्षणों और साक्षात्कारों के लिए पड़ोस में जाना, वर्तमान मुद्दों पर चर्चा करना, स्थानीय और वैश्विक इतिहास तथा भूगोल का अध्ययन करना, आसानी से उपलब्ध सामग्रियों के साथ व्यावहारिक प्रयोग करना और उनकी मरम्मत करना, पारिस्थितिक विज्ञान और उचित व्यवहार पर ज़ोर देना, दिन भर की, खाना पकाने की कक्षाओं में भाग लेना, कला दीर्घाओं में कला का अभ्यास करना, रंगमंच के प्रदर्शनों को अपने पढ़े जा रहे पाठों से जोड़ना, मज़ेदार वार्षिक परीक्षा का आयोजन करना जिसमें माता-पिता निर्णायकों के रूप में हों, अपनी प्रगति का आकलन करना सीखना – *शिक्षामित्र* स्कूल उन सभी तरीक़ों को आज़माने के लिए तैयार था जो अधिगम का सुदृढ़ीकरण करें।

ओपन ज़ोन तकनीक

इस तकनीक से अभ्यास और स्वतंत्र अधिगम को बढ़ावा मिला। 45 मिनट की अवधि में विद्यार्थियों को बिना शिक्षक के हस्तक्षेप के, विभिन्न विषयों की वर्कशीट को पूरा करना होता था। इन्हें ख़ुद ही जाँचने की प्रक्रियाएँ भी स्थापित की गई। बेशक, नियम तोड़े गए और अनियमितताएँ हुईं। लेकिन स्वतंत्र रूप से सीखने वाले तैयार हो रहे थे।

कला

कला और उसमें जो कुछ भी सन्निहित है, वह हमारे लिए जीने का एक तरीक़ा बन गया क्योंकि इसने बच्चों और शिक्षकों दोनों के जीवन में जड़ें जमा लीं। कला केवल एक कक्षा या पाठ्येतर गतिविधि नहीं थी। यह हर जगह फैली हुई थी : दीवारों पर, दरवाज़ों पर, नोटबुक पर, कागज़ पर और कपड़ों पर। अधिकांश परीक्षाओं में भी इसका प्रवेश हुआ।

फ़िल्में, गीत और संगीत

इन्हें अक्सर पाठ्यों के रूप में चुना जाता था क्योंकि इससे डिस्लेक्सिया वाले बच्चे अपना बेहतरीन प्रदर्शन कर पाते थे क्योंकि उन्हें पाठ पढ़ने नहीं पड़ते थे। उन्होंने चर्चाओं और गतिविधियों में, दूसरों की तुलना में कहीं अधिक सहजानुभूति से भाग लिया और सम्बन्धित वर्कशीट्स को भी दूसरों की ही तरह बहुत रुचि के साथ पूरा किया।

स्कूल का बन्द होना

अपनी समृद्ध शिक्षण पद्धतियों के बावजूद *शिक्षामित्र* पर्याप्त संख्या में विद्यार्थियों को आकर्षित नहीं कर सका। विशेष रूप से बच्चों के पिता पारम्परिक स्कूली शिक्षा को प्राथमिकता देते थे। अन्त में इसे कई अन्य कारणों से बन्द करना पड़ा जिसमें धन की कमी और आरटीई अधिनियम का लागू होना भी शामिल है। अधिकांश बच्चों को सरकारी स्कूलों में भर्ती किया गया। कुछ ने पढ़ाई जारी रखी और कॉलेज तक गए जबकि कुछ नौकरी करने लगे।

शिक्षामित्र संसाधन केन्द्र

शिक्षामित्र ने 2007 से ही अन्य संगठनों के साथ अपनी शिक्षण पद्धतियों को साझा करना शुरू कर दिया था। 2011 में स्कूल के बन्द होने के बाद, संगठन ने पूर्णकालिक गतिविधि के रूप में दूसरों को प्रशिक्षण देना, सामग्री बनाना और उनकी आपूर्ति करना शुरू कर दिया।

बंगाली प्रशिक्षण

शिक्षामित्र ने 3 दिवसीय कार्यशालाओं के माध्यम से बंगाली में त्वरित पठन और लेखन की विधि साझा करना शुरू किया। हमने देखा कि इस प्रक्रिया ने विभिन्न पृष्ठभूमि के शिक्षकों को

उत्साहित किया। पाठ्य की व्याख्या करना, अपने विचारों को सामने रखना और अपने स्वयं के पाठ्य की रचना करना – इन सबने शिक्षकों के मन में सशक्तिकरण और आनन्द की भावना का संचार किया। उनमें यह आत्म-विश्वास जागा कि वे इन विधियों का उपयोग कक्षा में कर सकते हैं। हमने कोलकाता और पश्चिम बंगाल के अन्य ज़िलों के कई सरकारी स्कूलों और निजी अँग्रेज़ी माध्यम वाले स्कूलों के शिक्षकों को प्रशिक्षित किया।

हमने बहुत कठिन परिस्थितियों में रहने वाले बच्चों के साथ काम करने वाले एनजीओ के ऐसे शिक्षकों को भी प्रशिक्षित किया जो रेलवे प्लेटफार्मों पर, बीड़ी बनाने वाले और कूड़ा बीनने वाले समुदायों में, आदिवासी बच्चों और कोलकाता और अन्य शहरों की विभिन्न झुग्गी-बस्तियों के बच्चों के साथ कार्य करते हैं। कई समूहों ने अपने स्वयं के वातावरण के अनुरूप पाठ्यों का निर्माण किया। *शिक्षामित्र* द्वारा विकसित शिक्षण-अधिगम सामग्रियों, वर्कशीट्स और पुस्तकों की माँग हमेशा बनी रहती है।

अँग्रेज़ी प्रशिक्षण

हमारा, फाउण्डेशन ऑफ बेसिक इंग्लिश प्रशिक्षण, बहुत लोकप्रिय हुआ और यह शिक्षामित्र के सर्वाधिक माँग वाले कार्यक्रमों में से एक है। यह कार्यक्रम भारत के कई राज्यों में आयोजित किया गया है जैसे पूर्वोत्तर, बिहार और हरियाणा में। इसका उपयोग अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के स्कूलों, बेंगलूरु के कई स्कूलों और बांग्लादेश में भी किया गया है। अँग्रेज़ी में जिन शिक्षकों की नींव कमज़ोर थी, उन्हें यह कार्यक्रम बेहद लाभप्रद लगा क्योंकि इसमें वे एक नए तरीक़े से अँग्रेज़ी सीखते थे।

कक्षा II से VII (प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय) के सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने इस कार्यक्रम का सफलतापूर्वक उपयोग किया है; कुछ ने प्राथमिक विद्यालय के उन बच्चों को पढ़ाने के लिए एक त्वरित उपचारात्मक उपाय के रूप में भी इसका उपयोग किया है जो प्राथमिक स्कूलों में इसे सीखने से चूक गए थे। हरियाणा सरकार के स्रोत शिक्षकों ने प्रशिक्षण के बाद कहा कि इस कार्यक्रम ने पहली बार उन्हें बताया कि वास्तव में कक्षा में क्या करना है जबकि नियमित कार्यशालाओं में केवल सैद्धान्तिक बातें बताई जाती थीं। बंगाली की तरह ही, यहाँ भी आज़माई हुई वर्कशीट्स का संकलन और वर्कबुक, सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाते हैं।

गणित प्रशिक्षण

गणित में कार्यशाला के आयोजन का अनुरोध उन्हीं सरकारी और ग़ैर-सरकारी स्कूलों और अधिगम स्थानों से आया, जिन्होंने भाषाओं के प्रशिक्षण का लाभ उठाया था।

हमारी गणित की सामग्री को पूरे भारत के स्कूलों और व्यक्तियों ने ख़रीदा है। कुछ स्कूलों ने लागत कम करने के लिए अपनी सामग्री ख़ुद बनाई। इन कार्यशालाओं के माध्यम से *शिक्षामित्र* को पता चला कि गणित का अधिगम सबसे अधिक प्रभावी तब होता था जब प्रतिभागी अपनी सामग्री ख़ुद बनाते थे। तब से इस अभ्यास को बढ़ावा मिला है। गणित और बांग्ला पढ़ाने के लिए विभिन्न संगठनों और स्कूलों में स्रोत व्यक्ति तैयार किए गए हैं। लेकिन अँग्रेज़ी के शिक्षकों को ढूँढ़ना अब भी एक चुनौती है।

अपने शिक्षणशास्त्रीय ज्ञान का प्रसार करने, शैक्षिक सामग्री के रूप में सहायता प्रदान करने और भारत के विभिन्न राज्यों के कई स्कूलों, संगठनों और यहाँ तक कि माता-पिता के लिए सलाहकार के रूप में कार्य करने के लिए *शिक्षामित्र* एक शैक्षिक संसाधन संस्थान के रूप में कार्यरत है। हमें अपने इस विश्वास से प्रेरणा मिलती है कि अधिगम हर बच्चे के लिए है - केवल अवसर पैदा करने होंगे।

सुदेशना सिन्हा पेशे से एक विशेष शिक्षिका हैं। प्रायोगिक प्राथमिक विद्यालयों (सेंट जोसेफ स्कूल में आशीर्वाद विद्यालय और शिक्षामित्र) की स्थापना करने, पाठ्यक्रम, शिक्षणशास्त्र, सामग्री, पुस्तकें और आकलन के उपकरण विकसित करने जैसे कार्यों के साथ जुड़ी रही हैं। शिक्षकों का प्रशिक्षण, शिक्षकों और बच्चों के लिए सरल और स्पष्ट भाषा में किताबें और दस्तावेज तैयार करना आदि उनकी रुचि के क्षेत्र रहे हैं। प्रभावी शिक्षण के लिए, विशेष रूप से भाषाओं के लिए, विधियों और सामग्रियों को डिज़ाइन करना उनकी विशेषज्ञता है। वे एक स्रोत शिक्षिका के रूप में कार्य करती हैं और टीचर्स सेंटर, मॉडर्न एकेडमी ऑफ कंटीन्यूइंग एजुकेशन, दिगन्तर, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय और विप्रो फाउण्डेशन में कक्षाएँ ले चुकी हैं। वे बांग्लादेश के एक वैकल्पिक स्कूल और पश्चिम बंगाल के आरियादहा में टेक्नो इंडिया ग्रुप ऑफ स्कूल्स की संसाधक सलाहकार है। वे ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस की सलाहकार भी रही हैं। अपने संगठन शिक्षामित्र के साथ-साथ वे वर्तमान में, विप्रो फाउण्डेशन के संसाधन प्रदाताओं में से एक हैं। उनसे shompare@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल